गेस्ट एडिटर वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल से नवभारत टाइम्स की खास बातचीत

महिला कर्मियों को आगे बढ़ाएं, प्रोडक्टिविटी 15-20% बढ़ जाएगी, हमने करके देखा है...

वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने नवभारत टाइम्स से बातचीत में भारत की अर्थव्यवस्था, मैन्युफैक्चरिंग, एआई, प्राइवेटाइजेशन, महिलाओं की भागीदारी जैसे मुद्दों पर खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि भारत के पास दुनिया के मुकाबले बेहतरीन नैचरल और ह्यूमन रिसोर्स हैं लेकिन उनकी पूरी क्षमता का इस्तेमाल अभी बाकी है। बिहार को लेकर भी उन्होंने भावुक अंदाज में अपनी बात कही। बातचीत के प्रमुख अंश...

NBT इंटरव्यू

Q मौजूदा जियो पॉलिटिकल हालात को देखते हुए हमारी स्थिति कैसी है? नए वर्ल्ड ऑर्डर में हम कहां खड़े हैं?

हिंदुस्तान के लोग शानदार हैं। हिंदुस्तान कभी गरीब नहीं हुआ। पहले भी सोने की चिड़िया था और आज भी है। पूरी दुनिया में भारत से बुद्धिजीवी लोग गए हैं और उनसे दूसरे देशों की परफॉर्मेंस चल रही है, उनसे फैक्ट्रियां चल रही हैं। भारत से ही लीडरशिप की क्वालिटी आई है। आज के वक्त में ये साफ है कि भारत में जितनी क्षमता है, उसका पूरा इस्तेमाल नहीं हुआ है। हमारे पास प्रचुर मात्रा में रिसोर्स हैं, चाहे सोना हो, ऑयल और गैस हो, कॉपर हो, बॉक्साइट हो। ऐसा लगता है कि दुनिया नहीं चाहती कि हम अपने नैचरल रिसोर्स को खोलें क्योंकि इसका मार्केट सब को चाहिए। उन्हें लगता है कि हमारे यहां कहीं न कहीं बैकडोर से वे लोग कुछ कर सकते हैं जिससे पॉलिसी चेंज करा देते हैं। कुछ ऐसी पॉलिसी बनवा देते हैं जिससे प्रॉडक्शन न बढ़े। इस बात को मैं पूरी गारंटी से कह सकता हूं कि हमारे पास बहुत दुनिया के मुकाबले अच्छे रिसोर्स हैं। नैचरल रिसोर्स ही नहीं, हमारे पास ह्यूमन रिसोर्स भी बहुत अच्छे हैं।

Q पूरी दुनिया का फोकस एआई पर है। एआई में हमें किस तरह आगे बढ़ना चाहिए?

सिर्फ एआई का सवाल नहीं है। हमें आत्मनिर्भर होना है और प्रगति करनी है। दुनिया में दो तरह से काम चलता है। एक कम्युनिस्ट देश है जहां सरकार रिसोर्स डिवेलप करती है। सब अपने हिसाब से चलाते हैं। दूसरे एंटरप्रेन्योरशिप है, कॉर्पोरेशन है। प्राइवेट सेक्टर नहीं है। प्राइवेट सेक्टर करीब 15 पर्सेंट होगा। कॉर्पोरेशन के लाखों शेयर होल्डर होते हैं, वो डिमांड करते हैं। हिंदुस्तान में पब्लिक सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर साथ चल रहे हैं। ये अननैचरल है। इसका कोई न कोई समाधान निकालना पड़ेगा। पब्लिक सेक्टर रहता है तो सरकार की कमजोरी रहती है कि किसी न किसी तरह से तो चलाना है। कोई न कोई पॉलिसी बने जिससे ये कॉर्पोरेशन बन जाएं। प्राइवेटाइजेशन की एक पूरी पॉलिसी होने से फर्क आएगा।

Q आपने प्राइवेटाइजेशन की बात की लेकिन जब भी इसकी बात होती है तो राजनीति भी होती है। इसे कैसे देखते हैं आप?

इसके अलावा कोई उपाय है नहीं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि कोई गोल्ड कंपनी जो 1 पर्सेंट गोल्ड बनाती है, वो कंपनी आप मुझे दे दो। जो अग्रीमेंट कराना है कराओ। मैं तीन साल में 100 पर्सेंट गोल्ड का उत्पादन करके दे दूंगा। दूसरा तरीका है कि पब्लिक सेक्टर को और छूट दीजिए, पैसा दीजिए। मुझे कोई पैसा नहीं चाहिए। विदेश में इंडस्ट्रियलिस्ट नहीं हैं। आमतौर पर वहां कॉर्पोरेशन हैं और उनके सीईओ हैं। उनके मालिक प्राइवेट कंपनी है, हजारों-लाखों शेयरहोल्डर्स हैं। यहां जो पब्लिक सेक्टर की कंपनी है, उसका मालिक कौन, सरकार और उसका जॉइंट सेक्रेटरी। अगर वह हटकर शेयर होल्डिंग हो, प्राइवेटाइजेशन हो... मैं ये जरूर कह सकता हूं कि हमारे में क्षमता है। हमारे गन्ने में जूस है ये बात मैं पक्के तौर पर बोल सकता हूं।

Q अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग इन्वेस्टमेंट पॉलिसी है। क्या इससे निवेश में फर्क पड़ता है?

अभी राज्य सरकारें शॉर्ट टर्म देख रही हैं। नीलामी कर दो बस। पैसा आ रहा है। हमें बिग पिक्चर देखनी होगी। बड़ा काम बड़े आदमी ही कर सकते हैं। बड़ी कंपनियां जिन्हें अनुभव है,

> **हर सेक्टर में महिलाओं को आगे बढ़ाने से उत्पादकता बढ़ेगी। हमारे वेदांता में कम से कम 30 से 35 पर्सेंट महिलाएं फैसले लेने वाले पदों पर हैं। इससे उत्पादकता 15-20 पर्सेंट तक बढ़ी है।**

उनसे ही काम कराना पड़ेगा। सरकार की कंपनी प्राइवेटाइज हो जाती है तो वे 10 गुना बड़ा काम कर लेंगी। उनका डर खत्म हो जाएगा। राज्य सरकारों में उत्साह है क्योंकि नीलामी से, जीएसटी से पैसा बहुत आ रहा है लेकिन लॉन्ग टर्म में उससे काम नहीं चलेगा। जितनी आसान पॉलिसी रखेंगे, उतना अच्छा होगा। महिलाओं को आपको एक्स्ट्रा देना होगा। महिलाओं को आगे बढ़ने से उत्पादकता बढ़ेगी। हमारे वेदांता में कम से कम 30 से 35 पर्सेंट महिलाएं फैसले लेने वाले पदों पर हैं। इससे उत्पादकता 15-20 पर्सेंट बढ़ी है। महिलाओं का काम करने का तरीका अलग है। हम लोग बिना सहमत हुए भी काम कर लेते हैं लेकिन महिलाएं जब किसी चीज को लेकर सहमत हो जाती हैं तो उनकी उत्पादकता बढ़ जाती है। हिंदुस्तान जिंक में हमारी पूरी पॉटलाइन महिलाएं चलाती हैं। क्रेन चलाने से लेकर माल लोड करना, माल उठाना सब महिलाएं करती हैं। राजस्थान में हमने एक रेस्क्यू टीम बनाई है, उसमें भी 100 फीसदी महिलाएं हैं।

Q वेदांता ग्रुप डीमर्जर की राह पर है। इसकी जरूरत क्यों पड़ी। यह कितना अहम कदम है?

हम जो करते हैं, वह मुश्किल काम होता है। हमने किसी की नकल नहीं की। जो किया, ओरिजनल किया। कॉपर हो, ऑयल हो या जिंक, सिल्वर बनाना हो, ये सारे लंबे और रिस्क वाले काम हैं। शुरू में लगता नहीं था कि काम इतना अच्छा चल जाएगा। हमने भारत एल्युमीनियम कंपनी (BALCO) खरीदी, जो नवरत्न कंपनी थी। बिक्री के समय हमसे कहा गया था कि 1 लाख टन ही माल बनता है। आप इससे ज्यादा प्रोडक्शन की कोशिश भी मत कीजिएगा। हमने उसे लिया और एक लाख की जगह सालाना 3 लाख टन उत्पादन किया और अब 6 लाख टन ले जा रहे हैं। ऐसे में डीमर्जर न करें तो क्या करें? वह अकेले कंपनी ही वेदांता से आगे निकल जाएगी। उसको आजादी देनी होगी। यही चीज हिंदुस्तान जिंक के साथ भी हुई। उसमें भी हमसे कहा गया कि आखिरी चरण में बेच रहे हैं, 140000 टन का प्रोडक्शन है, 4 साल आप उत्पादन कीजिए और फिर इसे बंद कर दीजिएगा। हमने एग्रीमेंट भी किया। अभी हम 10 लाख टन बनाते हैं और इसे भी दोगुना करने वाले हैं। उसमें हमें सिल्वर पैकेज दिख रहे थे। लोगों ने कहा कि यह निकल नहीं सकता। अभी हम सालाना 700 टन सिल्वर निकालते हैं। हम कोशिश करेंगे कि देश में आधे से ज्यादा सिल्वर यहां से निकले। जब कंपनियों पर उनके लाखों शेयरधारकों का प्रेशर आएगा, बोर्ड पर प्रेशर आएगा, तब वे लोग बेहतर काम करेंगे।

Q लोगों के दिमाग में है कि हम सॉफ्टवेयर की ही पावर बन सकते हैं। आप कह रहे हैं कि हमारे रिसोर्स पावर हैं। यह सोच कैसे बनेगी?

अमेरिका और भारत में कोई फर्क नहीं है। एक जैसी सोच है, एक जैसी एंटरप्रेन्योरशिप है, लोकतंत्र है। वे लोग मैन्युफैक्चरिंग

अनिल अग्रवाल ने नवभारत टाइम्स के पेज ले-आउट पर भी मंथन किया।

> **बिहार एक राज्य नहीं, सेंटिमेंट है। पूरी दुनिया में एक जगह में इतने प्रभावशाली लोग पैदा नहीं हुए हैं, जितने बिहार में। बुद्ध, महावीर, चंद्रगुप्त मौर्य, सीता जी को भी आप मान सकते हैं। गांधी जी को भी जब आंदोलन करना पड़ा, तो चंपारण जाकर सपोर्ट मिला।**

से ही आगे बढ़े हैं। ऑयल और गैस में उनका भारत जैसा हाल था। 40-50 पर्सेंट गैस, ऑयल थी। उन्होंने इंटरप्रेन्योरशिप चालू की। उन्होंने मैन्युफैक्चरिंग में कार से लेकर इंफ्रास्ट्रक्चर तक में काम किया। सरकार ने तय किया कि वह खुद बिजनेस नहीं करेगी। भारत में भी मैन्युफैक्चरिंग सबसे अहम है। गांव-गांव में मैन्युफैक्चरिंग होनी चाहिए, तभी हम आगे बढ़ेंगे।

Q मैन्युफैक्चरिंग और मेक इन इंडिया को लेकर अभी जो सरकार का रुख है, उसे आप कैसे देखते हैं?

बहुत अच्छा। आजकल आप डिजिटल तरीके से जमीन खरीद सकते हो। आपको गवर्नमेंट के पास जाना ही नहीं है। सामने वाला बेचने को तैयार है, आप उसकी प्राइस लगा सकते हो। ऑटोमैटिकली अगर प्राइस तय हो गया तो ऑटोमैटिक डॉक्यूमेंट बन जाएगा। आपको जो भी क्लियरेंस लेने हैं, वो सेल्फ सर्टिफिकेशन हो जाए। बाद में पूरी जांच करते रहें। कोई दोषी पाया जाए तो बड़ी से बड़ी सजा दें लेकिन शुरू में ही अगर परमिशन वगैरह लेनी पड़ती है तो तकलीफ हो जाती है।

हिंदी हैं हम

हम लोग सब हिंदी भाषी हैं। हम लोग हिंदी पेपर पढ़कर ही बड़े हुए। आपने (नवभारत टाइम्स) हिंदी को इतना महत्व दिया है जो अहम है। बीच में ये हाल हो गया था कि लोगों को हिंदी बोलने में शर्म आती थी। आप लोगों की वजह से हिंदी वापस एक अच्छी पोजीशन पर आई है। अब अगर कोई हिंदी बोलना नहीं जानता है तो उसे शर्म आती है।

Q हाल ही में आपने आईपीएल को लेकर सोशल मीडिया पोस्ट लिखी थी कि बिहार की टीम क्यों नहीं होनी चाहिए। क्या आप वाकई चाहते हैं कि एक टीम बिहार में खड़ी करें?

मेरा बचपन बिहार में गुजरा है। बिहार अलग है। बिहार एक राज्य नहीं, सेंटिमेंट है। पूरी दुनिया में एक जगह में इतने प्रभावशाली लोग पैदा नहीं हुए जितने बिहार में। बुद्ध, महावीर, चंद्रगुप्त मौर्य, सीता जी को भी आप मान सकते हैं। गांधी जी को भी जब आंदोलन करना पड़ा, तो चंपारण जाकर सपोर्ट मिला। बिहार एक से एक प्लेयर देता है। बार-बार हमें (बिहार के लोगों को) बोलना पड़ता है कि हम भी हैं। लोग हमें बोलते हैं कि इंडस्ट्री लगाओ। हम इंडस्ट्री कैसे लगाएं? झारखंड को अपने अलग कर दिया। धड़ अलग है, सिर अलग। जैसे नैचरल रिसोर्स झारखंड में हैं, वहां यूज नहीं कर पा रहे हैं। प्रोसेसिंग बिहार में हो सकती है लेकिन चीफ मिनिस्टर आपस में बात कर इसे तय करें। बिहार के लोगों के पास तो इतना पैसा आएगा नहीं कि 20,000 करोड़ में 10,000 करोड़ में आईपीएल टीम खरीद लें। मैंने एक बात लिखी तो पूरा राज्य भावुक हो गया। इसका कहीं न कहीं असर आएगा। एक अच्छा स्टेडियम बने, जैसा गुजरात में स्टेडियम बना।

Q क्या आप आईपीएल टीम खरीदने की पहल करेंगे?

हम कह रहे हैं कि टीम आगे होगी। अगर कोई फाइनैंशल सपोर्ट की जरूरत पड़ेगी तो हम तन मन धन से साथ रहेंगे। इसके अलावा हम कुछ नहीं कर सकते। लोग, अधिकारी, मंत्रीगण पहल करें। हम सपोर्ट करेंगे।

Q कई बार आपकी कंपनी सवालों के घेरे में भी आई है। ऐसा क्यों?

मैं तो एक हूं जो नैचरल रिसोर्स के सेक्टर में काम कर रहा हूं। आप जमीन, खदान, ऑयल-गैस या मिनरल्स से जुड़े रहेंगे तो विवाद भी आएंगे। आसपास के लोग होंगे, एनजीओ होंगे, विदेशी हित होंगे, राजनीतिक दल होंगे- सबकी अपनी-अपनी सोच और अपने हित होते हैं। लेकिन हम एक बात पूरी जिम्मेदारी से कहते हैं कि वेदांता हर काम कानून के दायरे में और पूरी पारदर्शिता के साथ करता है। कई बार कुछ लोकल तत्व माहौल बनाने की कोशिश करते हैं। विपक्षी पार्टियों को भी मौका मिल जाता है कि वे अपनी राजनीति करें। लेकिन अगर इन आलोचनाओं और विरोध से डर जाएं, तो फिर बड़े काम करना संभव नहीं होगा। देश को आगे बढ़ाना है तो कठिन फैसले लेने पड़ेंगे, रिस्क लेना पड़ेगा। गवर्नेंस और ट्रांसपेरेंसी से कभी समझौता नहीं होना चाहिए। शरीर तो एक दिन चला जाना है, लेकिन काम और सोच रह जाती है। मैं भगवान से बस यही प्रार्थना करता हूं कि मेरी हिम्मत कभी कम न हो और मेरी नम्रता भी हमेशा बनी रहे।

Q महिलाओं को आगे बढ़ाने का विचार कैसे आया?

हम तो स्वार्थी आदमी हैं (हंसते हुए)। हमने देखा कि महिलाओं के आने से हमारी उत्पादकता बढ़ी है। पुरुष काम में उतना ध्यान नहीं लगाते जितना महिलाएं लगाती हैं।

Q समाज के लिए आप काफी काम कर रहे हैं। समाज को वापस देना है, इसकी प्रेरणा कहां से मिली?

हमने नंदघर की पहल की है जहां बच्चे पढ़ रहे हैं। हमने 15 हजार नंदघर शुरू किए। देश में कम से कम 12-13 लाख नंद घर चाहिए। मुझे गांव के बच्चों को इंग्लिश सिखानी है। जो बच्चा इंग्लिश बोल लेता है, उसमें कॉन्फिडेंस आ जाता है। हमने प्रयोग किया जो बहुत सफल हो रहा है। उन बच्चों की माताएं भी इससे जुड़ी हैं। महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं, उनमें भी भरोसा आता है। मेरा एक बेटा था जिसे हमने खो दिया। मुझे लगा कि ज्यादातर वेल्थ सोसाइटी के पास वापस जानी चाहिए। अमेरिका में ऐसा बहुत होता है। लोग जायदाद का बड़ा हिस्सा समाज को देते हैं। डिस्कवरी चैनल में आपने देखा, द बिल्ट अमेरिका। वहां कहीं पॉलिटिशियन का नाम नहीं आया, पांच कारोबारियों का नाम आया। उन्होंने अपनी दौलत अपने बच्चों को नहीं दी। समाज को दी। हमने भी ये सोचा है। भारत में लोग शर्म करते हैं कारोबारियों का नाम लेने में। भारत में सब बच्चों को अच्छा न्यूट्रिशन मिले, अच्छी एजुकेशन मिले, महिलाएं आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बनें तो देश बहुत आगे बढ़ेगा। मैं सबको कहता हूं कि कोई भी काम कर रहे हो, वह समाज के हित में नहीं है, तो मत करना।

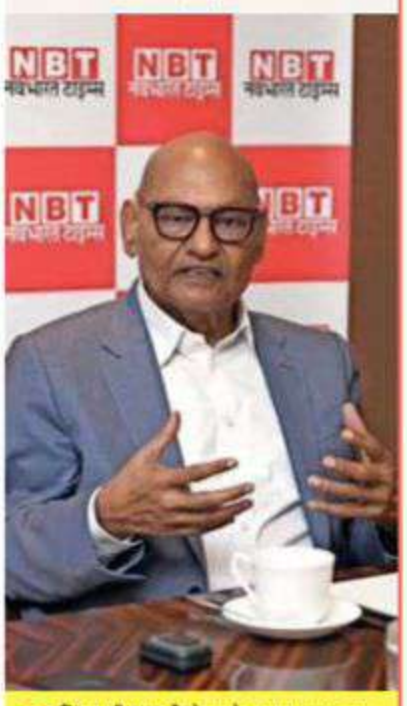

> **भारत में सब बच्चों को अच्छा न्यूट्रिशन मिले, अच्छी एजुकेशन मिले, महिलाएं आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बने तो देश बहुत आगे बढ़ेगा। मैं सबको कहता हूं कि कोई भी काम कर रहे हो, वह समाज के हित में नहीं है, तो मत करना।**

Q बिहार की सूरत कैसे बदले? तमाम प्रयास हुए लेकिन बहुत कुछ हुआ नहीं।

जरूरी है कि यहां की आर्थिक स्थिति अच्छी हो, रोजगार मिले, महिलाओं का विकास हो, उनको रोजगार मिले। बड़े तरह की इंडस्ट्री जरूरी है। बड़ी इंडस्ट्री तो तभी लग सकती है जबकि रॉ मटीरियल मिले। हम लोग कोशिश कर रहे हैं कि इंडस्ट्री लगाएं, लेकिन झारखंड से तालमेल जरूरी है। बेहतर शिक्षा जरूरी है। देश के बच्चे पढ़ने विदेश में जा रहे हैं। बिहार में एक यूनिवर्सिटी बने जो बोस्टन सिटी जैसी बन जाए। टूरिज्म भी बढ़ सकता है। सबसे ज्यादा पैसा भी दूसरे स्टेट से हमारे बिहार के लोग ही अपने घर वापस भेजते हैं। एक क्रांति तो अंदर आ गई है।

Q आपकी कोई बड़ी पृष्ठभूमि नहीं थी। शिक्षा वैसी नहीं थी, फिर भी आपने इतना बड़ा विशाल औद्योगिक साम्राज्य खड़ा किया। आज का समय ऐसा है, जब लोग सिस्टम से बेहद नाराज होकर कॉकरोच को एक प्रतीक के रूप में ला रहे हैं। आपका उस पीढ़ी के लिए क्या मैसेज है?

अवसर बहुत हैं। जितने अवसर आज हिंदुस्तान में हैं, शायद दुनिया में कहीं नहीं हैं। हर दिन नई डिमांड पैदा हो रही है, नए सेक्टर खुल रहे हैं, नई टेक्नोलॉजी आ रही है। इसलिए मैं युवाओं से हमेशा कहता हूं कि सपने जरूर देखो और उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत करो। सिस्टम को कोसने से कुछ नहीं होगा। अगर गुस्सा है तो उसे ऊर्जा बनाइए, उसी से आगे बढ़िए। मेरी खुद की कोई बड़ी पृष्ठभूमि नहीं थी। शिक्षा भी बहुत बड़ी नहीं थी। लेकिन एक भूख थी कि कुछ करना है। जब हम 14-15 साल के थे, तब अखबारों में पढ़ते थे कि किसी ने नया कारोबार खड़ा कर लिया। हम किसी से कहते नहीं थे, लेकिन अंदर लगता था कि एक दिन कुछ बड़ा करना है। वही सपना मुंबई ले आया। मैं अमेरिका में देखता हूं कि वहां बड़े उद्योगपति भी बहुत साधारण तरीके से रहते हैं। लोगों से मिलते हैं, जमीन से जुड़े रहते हैं। मेरा मानना है कि पैसा जरूर कमाइए, सफल बनिए, लेकिन रहन-सहन सामान्य रखिए। आज की पीढ़ी को मैं यही कहना चाहता हूं कि हिंदुस्तान अवसरों का देश है। यहां मेहनत करने वाले के लिए जगह की कमी नहीं है। धैर्य रखिए, सीखते रहिए और अपने सपनों को छोटा मत होने दीजिए।

गेस्ट एडिटर के रूप में अनिल अग्रवाल

खबर पर पैनी नज़र, हर विषय पर साफ राय

नवभारत टाइम्स के इस खास अंक के लिए वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने गेस्ट एडिटर की जिम्मेदारी संभाली। हर खबर पर उनकी पैनी नजर और हर मुद्दे पर स्पष्ट राय देखने को मिली। मीटिंग के दौरान उन्होंने खबरों की लिस्ट को गंभीरता से सुना और अपने पसंदीदा विषयों पर खुलकर विचार साझा किए। सिटी पेज से लेकर एडिटोरियल तक, हर सेक्शन को उन्होंने गहराई से समझा और जहां जरूरी लगा, वहां बेबाक सुझाव भी दिए। उनका अंदाज औपचारिक नहीं, बल्कि एक जमीन से जुड़े उद्योगपति की सहज और व्यावहारिक सोच को दिखा रहा था। समस्याओं को देखने का उनका नजरिया भी अलग रहा। वे सिर्फ मुद्दों को उठाने तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उनके समाधानों पर ज्यादा जोर दिया। उनके मुताबिक, किसी भी चुनौती को अवसर में बदलने की सोच ही असली ताकत है। लेआउट और प्रेजेंटेशन पर भी उनकी पैनी नजर रही। क्या बेहतर हो सकता है और कहां सुधार की गुंजाइश है, इस पर उन्होंने खुले तौर पर अपनी बात रखी। अनिल अग्रवाल का यह गेस्ट एडिटर अनुभव औपचारिकता से कहीं आगे बढ़कर एक सक्रिय और संदेश देने वाली पहल साबित हुआ, जिसने पूरे अंक को एक नया नजरिया दिया।